राष्ट्रीय आकलन एवं प्रत्यायन परिषद में संकेतकों की भूमिका

डॉ. कुमुद भारद्वाज
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली

सारांश

किसी भी संस्थान की शैक्षिक प्रक्रिया में संस्था का प्रदर्शन, पाठ्यक्रम चयन एवं कार्यान्वयन, शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन छात्रों के परिणाम, संकाय सदस्यों का अनुसंधान कार्य एवं प्रकाशन, बुनियादी सुविधाएँ, संसाधनों की स्थिति प्रशासन व्यवस्था संगठन, आर्थिक स्थिति, छात्र सेवाएँ इत्यादि उस संस्थान की वास्तविक स्थिति का परिचय देते हैं। इन सब की जानकारी से ही कोई भी शैक्षिक संस्था या विश्वविद्यालय निर्धारित गुणवत्ता के मानकों को पूरा करता है। इन सब जानकारियों को एकत्रित करने के लिए संकेतकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संकेतकों के माध्यम से वर्तमान स्थिति को मापने के साथ–साथ वित्तीय व आर्थिक रूझानों का पुर्वानुमान लगाने में मदद मिलती है।

संकेत शब्द :– *मूल्याकंन, प्रत्यायन, गुणवत्ता, मानक, एन.ए.ए.सी. आदि।*

नैक क्या है :–

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एक संस्थान है जो भारत की उच्च शिक्षा व शिक्षा संस्थानों का आकलन और प्रत्यायन (मान्यता) का कार्य करती है। इसकी स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1994 में गयी थी। इसमें गुणवत्ता स्थिति की समझ प्राप्त करने के लिए कॉलेजों, विश्वविद्यालयों या अन्य मान्यता प्राप्त संस्थानों जैसे उच्च शैक्षणिक संस्थानों (HEI) का मूल्यांकन और मान्यता के लिए कार्य किया जाता है। अगर कोई राज्य विश्वविद्यालय एन.ए.ए.सी. से मान्यता प्राप्त नहीं करता है तो उसे यू.जी.सी. से अनुदान और वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती है यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की सिफारिश का परिणाम है।

गुणवत्ता के मानदंडः

- पाठ्यक्रम एवं कार्यान्वयन
- शैक्षिक प्रक्रियाओं में संस्था का प्रदर्शन
- शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन तथा छात्रों के परिणाम
- संकाय सदस्यों का अनुसंधान कार्य एवं प्रकाशन
- बुनियादी सुविधाएँ तथा संसाधनों की स्थिति
- संगठन
- प्रशासन व्यवस्था
- आर्थिक स्थिति
- छात्र सेवाएँ

यह तीन चरणों की प्रक्रिया के आधार पर शिक्षण संस्थान का मूल्यांकन करता हैः–

- यह सामान्य परिषद (GC) और कार्यकारिणी परिषद (EC) के माध्यम से कार्य करता है।
- इसमें भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के विभिन्न वर्गो के शैक्षिक प्रशासक नीति निर्माता और वरिष्ठ शिक्षाविद शामिल होते हैं।

- नैक का अधिदेश गुणवत्ता आश्वासन को उच्च शिक्षा संस्थानों के कामकाज का अभिन्न अंग बनाना है।

संकतेक क्या हैं::

संरचनात्क स्तर (संस्थागत ग्रेड और प्रत्यायन स्थिति): इसमें पहले चार श्रेणियों में कालेजों को रखा जाता था लेकिन अब 8 श्रेणियों में रखा जाता है। नैक 4 सी.जी.पी.ए. से लेकर 1.5 से कम सी.जी.पी.ए. के आधार पर शिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन करता है। यह सी.जी.पी.ए. ही संस्थान के बेहतर होने को प्रदर्शित करता है।

आठ श्रेणियाँ इस प्रकार हैं:

3.51–4.00 ए ++ मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
3.26–3.50 ए + मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
3.01–3.25 ए मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
2.76–3.00 बी ++ मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
2.51–2.75 बी + मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
2.01–2.50 बी मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
1.51–2.00 सी मान्यता प्राप्त प्रत्यायित
1.50डी गैर प्रत्यायित

परिषद मिशन:

- उच्च शिक्षा संस्थानों या उनकी इकाइयों या विशिष्ठ शैक्षणिक कार्यक्रमों या परियोजनाओं के आवधिक मूल्यांकन की व्यवस्था करना।
- उच्च शिक्षा में स्वमूल्यांकन, जवाबदेही, स्वायत्तता और नवाचारों को प्रोत्साहित करना।
- उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित करना।
- परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना।
- गुणवत्ता मूल्यांकन प्रोत्साहन और जीविका के लिए उच्च शिक्षा के अन्य हितधारकों के साथ सहयोग करना।

परिषद के बुनियादी मूल्य :

1. राष्ट्रीय विकास में योगदान
2.विद्यार्थियों में वैश्विक सक्षमता विकसित करना
3.विद्यार्थियों में मूल्यपरक प्रणाली की भावनाओं का संचार करना।
4.प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना
5.उत्कृष्टता की खोज

संशोधित मूल्यांकन और प्रत्यायन (ए एण्ड ए) ढांचा:

शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए संशोधित मूल्यांकन और प्रत्यायन ढांचा 2017 में आरम्भ किया गया था।

इसे निष्पक्ष व पारदर्शी बनाने के लिए इसमें हुए परिवर्तन इस प्रकार हैं–

- समकक्ष गुणात्मक निर्णय से हटकर अधिक निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ आँकड़ों पर आधारित मात्रात्मक संकेतक मूल्याकंन पर बल दिया गया है।
- मापनीयता और सुदृढ़ता की पुष्टि के लिए आई.सी.टी. का व्यापक उपयोग।
- प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए प्रश्नों की संख्या, रिपोर्ट के आकार, दौरे के दिनों आदि में भारी कटौती की गई है।
- गुणात्मक सुधार उपकरण के रूप में बेंचमार्किंग को बढ़ावा देना। इसके लिए नैक के संकेतकों के साथ अंतराष्ट्रीय गुणवत्ता फ्रेमवर्क की तुलना के माध्यम से प्रयास किया गया।
- समकक्ष टीम मूल्यांकन के बाद ऑनलाइन मूल्यांकन के आधार पर सिस्टम जेनरेटेड स्कोर (एस.जी. एस.) शुरू करना।
- आंकड़ों के तृतीय पक्ष सत्यापन की शुरूआत।
- विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों को मेट्रिक्स, वेटेज और बेंचमार्क में उचित अंतर प्रदान करना।
- मूल्यांकन प्रक्रिया में विभिन्न हितधारकों, विशेष रूप से विद्यार्थियों और पूर्व विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए विभिन्न मैट्रिक्स को संशोधित करना।
- विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों की विशिष्टताओं को उनसे संबंधित नियमावली में उचित रूप से अलग करना।

मूल्यांकन का केन्द्र बिन्दु :

- नैक गुणवत्ता पहल, गुणवत्ता पोषण, गुणवत्ता संवर्धन के संदर्भ में उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता संस्कृति पर ध्यान केन्द्रित करता रहा है, यह उनके विज़न, संगठन, संचालन और प्रक्रियाओं में परिलक्षित होता है।
- नैक के इस विश्वास के अनुरूप गुणवत्ता संबंधी चिन्ताएँ संस्थागत हैं, गुणवत्ता मूल्यांकन (क्यू.ए.) को स्वमूल्यांकन के माध्यम से बेहतर तरीके से किया जा सकता है।
- मूल्यांकन एवं प्रत्यायन की पूरी प्रक्रिया के डिजिटल कवरेज को बढ़ाने का कार्य किया गया है।
- मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के उत्तरवर्ती चक्रों के लिए जाने वाले उच्च शिक्षा संस्थानों के सन्दर्भ में आवश्यक संभावित अन्तर की पहचान के लिए, प्रक्रिया में उचित गुंजाइश प्रदान की गई है। इसके उच्च शिक्षा संस्थानों को पिछले ए एण्ड ए चरण के बाद उनके द्वारा किए गए विकास को प्रस्तुत करने का उचित अवसर मिलेगा।

संकेतकः:

जैसा कि हम जानते हैं राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद का मुख्य उद्देश्य अधिदेश में उच्च शिक्षा संस्थानों, विश्व विद्यालयों और कॉलेजों अथवा एक से अधिक एकको अर्थात विभागों, स्कूलों, संस्थाओं, कार्यक्रमों आदि का मूल्यांकन करना और उन्हें प्रत्यायित करना है। परिषद द्वारा 1 अप्रैल 2007 से लागू की गई पद्धति के अन्तर्गत उच्च शिक्षण संस्थानों का दो चरणीय दृष्टिकोण द्वारा मूल्यांकन किया जाता हैं तथा उन्हें प्रत्यायित किया जाता है।

प्रथम चरण – संस्था के गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए संस्थागत पात्रता प्राप्त करना (आई. ई. ई. क्यू. ए.)

द्वितीय चरण – प्रत्यायित संस्थानों के लिए ए.बी.सी. ग्रेडों के अन्तर्गत संस्थान का मूल्यांकन और प्रत्यायन करना है। डी ग्रेड उन संस्थानों को दिया जाता है जो अभी तक प्रत्यायित नही हैं।

प्रत्यायन के लिए सात मानदण्डों को रखा हैः–

1. पाठ्यचर्या पहलू
2. शिक्षण अधिगम और मूल्याकंन
3. अनुसंधान परामर्श तथा विस्तार
4. अवसंरचना तथा अधिगम के संसाधन
5. छात्र सहायता और प्रगति
6. अभिशासन नेतृत्व और प्रबन्धन
7. मूल्यांकन प्रक्रिया के लिए आधार रूप में नवाचारी प्रक्रियाएँ व संस्थागत मूल्य

संकेतकों के प्रकारः

प्रत्येक मानदण्ड के अन्तर्गत मुख्य संकेतकों की पहचान की गई है। इन मुख्य संकेतकों (के आई) का विस्तार मैट्रिक्स के रूप में किया गया है, जो शिक्षक शिक्षा संस्थानों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गई हैं। शिक्षक शिक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप संकेतकों (के आई) को और मैट्रिक्स को उपयुक्त रूप से संशोधित किया गया है। सात मानदण्ड के साथ उनके संकेतक नीचे दिए जा रहे हैं।

पाठ्यचर्या संबंधी पहलू मानदण्ड–1:

किसी भी शैक्षणिक संस्थान का मुख्य आधार पाठ्यचर्या के पहलू हैं एक महाविद्यालय एक ऐसी इकाई है जो शैक्षणिक व प्रशासनिक प्रक्रियाओं को वैध बनाने के लिए विश्व विद्यालय पर निर्भर करती है। पाठ्यक्रम पूर्व निर्धारित होता है। प्रत्येक कॉलेज को इस तरह से निर्धारित पाठ्यक्रम और विशिष्टताओं को अपनाने की परिकल्पना करनी होती है। प्रत्येक शैक्षिक संस्थान ''पाठ्यचर्या को अर्थपूर्ण रूप से गतिविधियों में परिवर्तित करने की योजना बनाता है। विद्यार्थियों के बीच पेशेवर परिपेक्ष्य की समझ का पता लगाने के लिए विशेष गतिविधियों पर जोर देने पर निर्णय लेता है।

मानदण्ड 1 में मुख्य संकेतक समाहित हैं:

1.1 पाठ्यचर्या योजना
1.2 शैक्षणिक लचीलापन
1.3 पाठ्यचर्या संवर्धन
1.4 प्रतिक्रिया प्रणाली

1.1 पाठ्यचर्या योजना :

प्रत्येक महाविद्यालय अपनी संसाधन क्षमता, संस्थागत लक्ष्यों और चिन्ताओं, स्थानीय परिस्थितियों, अपने छात्र छात्राओं के अनुसार समग्र ढाँचे के अन्तर्गत पाठ्यक्रम को संचालित करता है। सभी पाठ्यक्रम शिक्षक परिणामों के साथ–साथ कोर्स लर्निंग परिणामों को ध्यान में रखते हुए किए जाता है।

1.2 शैक्षणिक लचीलापन :

शैक्षणिक लीचलापन का अर्थ है पाठ्य की समय सीमा शैक्षणिक गतिविधियाँ अन्तर विषयों विकल्पों और पाठ्यक्रम गतिविधियों से उत्पन्न विकल्पों के उपयोग में स्वतंत्रता है।

1.3 पाठ्यचर्या संवर्धन : इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के सर्वागींण विकास के उद्देश्य से लिंग, पर्यावरण स्थिरता, मानवीय मूल्यों और व्यवसायिक नैतिकता रचनात्मकता और भिन्न दक्षताओं के विकास को ध्यान में रखा जाता है।

1.4 प्रतिक्रिया प्रणाली : पाठ्यचर्या के पुनरीक्षण और पुनर्रचना की प्रक्रिया नवीन घटनाक्रम और हितधारकों की प्रतिक्रिया पर आधारित है।

मानदण्ड –2 शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन :

इस मानदण्ड में सीखने के प्रासंगिक और प्रभावी अनुभवों की पृष्ठभूमि और क्षमताओं से संबंधित विद्यार्थियों के प्रयासें को शामिल किया गया है। परस्पर निर्देशात्मक तकनीकों और विभिन्न माध्यमों से सीखने की विद्यार्थियों की संलग्नता ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से, समूह चर्चा, वाद–विवाद, परियोजनाओं, प्रस्तुतियों, प्रयोगों, अभ्यास, उच्च स्तरीय सोच तर्क, शिक्षकों व छात्रों के प्रदर्शन का लगातार मूल्यांकन करने के लिए उपयोग की जाने वाली दक्षता इस मानदंड के प्रमुख विषय हैं।

इस मानदण्ड के मुख्य संकेतक हैं–

2.1 विद्यार्थी नामांकन और विवरण
2.2 विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की आवश्यकता पूर्ति
2.3 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
2.4 सक्षमता और कौशल विकास
2.5 शिक्षक प्रोफाइल और गुणवत्ता
2.6 मूल्यांकन प्रक्रिया
2.7 विद्यार्थी कार्यनिष्पादन और ज्ञान अर्जन निष्कर्ष
2.8 विद्यार्थी सन्तुष्टि निष्कर्ष

2.1 विद्यार्थी नामांकन और विवरण : इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम में प्रवेश देने की प्रक्रिया पारदर्शी सुव्यवस्थित तत्व के माध्यम से सम्पादित हुई है इसका विवरण शामिल है।

2.2 विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की आवश्यकता पूर्ति : इसके अन्तर्गत शिक्षण संस्थान पिछड़े समुदाय के साथ–साथ विशेष श्रेणी के विद्यार्थी, दिव्यांग, लैंगिक समानता पर विचार किया जाता है।

2.3 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : इसमें शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा, भागीदारी, पूर्ण अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम और सहयोगात्मक शिक्षण सहित विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किये जाते हैं। जो सीखने को अधिक व्यक्तिपरक, रचनात्मक और परिवर्तनशील बनाते हैं।

2.4 सक्षमता और कौशल विकास : इसके अन्तर्गत यह प्रयास किया जाता है। कि शिक्षक ऐसा हो जो अपने छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार कर सके।

2.5 शिक्षक प्रोफाइल और गुणवत्ता :शिक्षक गुणवत्ता यह प्रदर्शित करती है कि शिक्षक किस हद तक गतिशील व पेशेवर रूप से अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं।

2.6 मूल्यांकन प्रक्रिया : इसका उपयोग सीखने के आकलन के लिए किया जाता है कि कोई भी शिक्षक शिक्षा संस्थान विभिन्न प्रकार के सीखने के तरीकों के लिए किस प्रकार का मूल्यांकन तंत्र विकसित करता है।

2.7 विद्यार्थी का कार्य निष्पादन और ज्ञान अर्जन निष्कर्ष : इस संकेतक में विद्यार्थियों के वास्तविक प्रदर्शन का पता चला हैं कि विद्यार्थियों की जागरूकता की सीमा और उन्हें दर्शाने में वास्तविक प्रदर्शन व परिणाम क्या हैं।

2.8 विद्यार्थी संतुष्टि : विद्यार्थी संतुष्टि संस्थान में शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता का प्रत्यक्ष संकेतक है।

मानदण्ड–3 अनुसंधान और सम्पर्क गतिविधियाँ : मानदण्ड–3 के अन्तर्गत अनुसंधान, नवाचार के संदर्भ में संस्थान की नीतियों, प्रथाओं और उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। इसमें 'शोध संस्कृति' को बढ़ावा देने के लिए संस्थान द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं एवं प्रयासों से संबंधित है।

मानदण्ड–3 के मुख्य संकेतक हैं–

3.1 अनुसंधान के लिए संसाधन जुटाना

3.2 अनुसंधान प्रकाशन

3.3 संपर्क गतिविधियाँ

3.4 सहयोग और संबंध

3.1 अनुसंधान के लिए संस्थान जुटाना : शोध संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अनुसंधान करने के लिए परिसर में स्थान एवं उपकरण और सहायता सुविधाओं के संदर्भ में आवश्यक बुनियादी ढ़ांचा उपलब्ध कराना इसके मुख्य कार्य हैं।

3.2 शोध प्रकाशन : अनुसंधान के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक निष्कर्षों को साझा करने से शिक्षण और अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। क्योंकि गुणवत्ता पूर्ण शोध निष्कर्ष समाज, उद्योग, क्षेत्र और राष्ट्र के लिए लाभदायक है। अतः शोध प्रकाशन महत्वपूर्ण संकेतक है।

3.3 संपर्क गतिविधियाँ : इस संकेतक का उद्देश्य छात्रों को सामुदायिक मुद्दों, लैंगिक असमानताओं, सामाजिक असमानता आदि के प्रति संवेदनशील बनाना और समाज के प्रति मूल्य और प्रतिबद्धता विकसित करना है।

3.4 सहयोग और संबंध : उच्च शिक्षा संस्थान सहयोग के माध्यम से कार्य क्षेत्र के साथ निकट संपर्क बनाए रख सकते हैं। सहयोगात्मक प्रयास को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि ऐसी गतिविधियों के लिए संस्थान अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों या एजेंसियों के बीच एक औपचारिक समझौता करे।

मानदण्ड–4 अवसंरचना और अधिगम के संसाधन : तकनीकी विकास बहुत तेजी से हो रहा हैं इसलिए बुनियादी ढांचे और सीखने के संसाधनों में उन्नयन महत्वपूर्ण है अतः उच्च शिक्षा संस्थानों को अपने छात्रों और शिक्षकों के लाभ के लिए तकनीकी विकास पर जोर देना चाहिए।

मानदण्ड–4 के मुख्य संकेतक हैं–

4.1 भौतिक सुविधाएँ

4.2 अधिगम स्रोत के रूप में पुस्तकालय

4.3 सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना

4.4 परिसर एवं अविसंचना का रखरखाव

4.1 भौतिक सुविधाएँ : शैक्षिक कार्यक्रम के प्रभावी और कुशल संचालन के लिए पर्याप्त बुनियादी ढाँचे को विकास और अन्य सहायक सुविधाओं को विकसित करना जरूरी है। इसके लिए प्रतिवर्ष व्यय का प्रावधान करने से उनकी निरन्तर उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

4.2 अधिगम के स्रोत के रूप में पुस्तकालय : डिजीटल साधनों की उपलब्धता के कारण आज पुस्तकालय की कार्य प्रणाली में भारी बदलाव देखने को मिला है। आई.एल.एम.एस का उपयोग पुस्तकालय का स्वपालन, ई पत्रिकाओं और पुस्तकों का उपयोग पुस्तकालय में ई संसाधन आज अनिवार्य विषय बन गया है।

4.3 सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना : उच्च शिक्षा के सभी संस्थानों को अपने छात्रों और कर्मचारियों के उपयोग के लिए परिसर में आई.सी.टी. सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए।

4.4 परिसर अवसंरचना का रखरखाव : परिसर का परिवेश सीखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है इसलिए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिए आधारभूमि संरचना उपलब्ध कराना आवश्यक है।

मानदण्ड–5 विद्यार्थी सहायता और प्रगति : इस मानदण्ड में संस्थान के ऐसे प्रयास पर विचार किया जाता है जो विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करने व उनके विकास और प्रगति को सुविधानजनक बनाने के लिए किए जाते हैं।

इस मानदण्ड का सार इन संकेतकों में समाहित हैं :–

5.1 विद्यार्थी सहायता

5.2 विद्यार्थी प्रगति

5.3 विद्यार्थी भागदारी और गतिविधियाँ

5.4 पूर्व विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध

5.1 विद्यार्थी सहायता : इसमें मार्गदर्शन प्रकोष्ठ, नियुक्ति प्रकोष्ठ, शिकायत निवारण प्रकोष्ठ, कल्याणकारी उपाय, संस्थान द्वारा किए जाते हैं जिससे विद्यार्थियों को अकादमिक व भौतिक मदद मिलती है।

5.2 विद्यार्थी प्रगति : विद्यार्थी प्रगति का अर्थ है स्नातक के बाद उनका उच्च अध्ययन या रोजगार के लिए आगे बढ़ाना।

5.3 गतिविधियों में विद्यार्थी की भागीदारी : इस संकेतक में विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी में सुधार करने के लिए संस्थान विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए परिषद में विभिन्न गतिविधियों के लिए सुविधाएँ प्रदान करते हैं

5.4 पूर्व विद्यार्थियों को शामिल करना : छात्रों व शिक्षकों के लाभ के लिए संस्थान के पूर्व विद्यार्थी अकादमिक और आर्थिक दोनों तरह से योगदान कर सकते हैं। संस्थान के विकास के लिए पूर्व विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है।

मानदण्ड–6 अभिशासन, नेतृत्व और प्रबन्धन : किसी संस्थान के अच्छे होने का अनुमान उनके द्वारा मानव संस्थान नियोजन भर्ती, प्रशिक्षण, मूल्यांकन, वित्तीय प्रबंधन, नेतृत्व की समग्र भूमिका से लगाया जा सकता है।

इस मानदण्ड के मुख्य संकेतक हैं –

6.1 संस्थागत दृष्टि और नेतृत्व

6.2 कार्यनीतिक विकास और परिनियोजन

6.3 संकाय सशक्तीकरण कार्यनीतियाँ

6.4 वित्तीय प्रबंधन और संसाधन जुटाना

6.5 आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली

6.1 संस्थागत दृष्टि और नेतृत्व : संगठनात्क संस्कृति के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है कि मूल्यों को स्थापित करके प्रभावी नेतृत्व और सहभागी निर्णय लेने की प्रक्रिया संस्थान की दृष्टि में हो। जिससे लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। संस्थान की औपचारिक और अनौपचारिक व्यवस्थाएँ लक्ष्य प्राप्त करने में संस्थान के प्रयासों को दर्शाती है।

6.2 कार्यनीतिक विकास और परिनियोजन : संस्थान और उनकी शैक्षणिक और प्रशासनिक ईकाइयों के कार्य भागीदारी और पारदर्शिता के सिद्धान्तों द्वारा शासित होते हैं।

6.3 शिक्षक अधिकारिता कार्यनीतियाँ : शिक्षक संस्थान की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, शिक्षकों को सशक्त बनाने के लिए, कर्मचारियों का नियमित प्रदर्शन मूल्यांकन और फीडबैक देना अति आवश्यक है।

6.4 वित्तीय प्रबंधन और संसाधन जुटाना : बजट बनाना व धन का उचित उपयोग करने व संसाधन जुटाना प्रमुख संकेतक है इससे संस्थान की आय और व्यय लेखा परीक्षा के अधीन है।

6.5 आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रणालीः (आई. क्यू. ए. एस.) सभी शैक्षणिक व प्रशासनिक पहलुओं में गुणवत्ता प्रबन्धन कार्य नीतियों को अपनाना मुख्य संकेतक है, संस्था के पास (आई. क्यू. ए. एस.) होता है। यह अपने प्रावधानों में सहभागी दृष्टिकोण अपनाता है।

मानदण्ड–7 संस्थागत मूल्य और उत्कृष्ट पद्धतियाँ :– बदलते राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक होने के लिए किसी भी शैक्षणिक संस्थान को उनकी चुनौतियों के लिए तैयार होना चाहिए। प्रत्येक संस्थान को कम से कम कुछ ज्वलंत मुद्दों जैसे– लिंग संवेदनशीलता पर्यावरण चेतना और स्थिरता, समावेशिता और पेशेवर नैतिकता के प्रति उत्तरदायी होने का अधिदेश है और समय के साथ कार्य करने से अनेक अनूठे तरीकों के कारण प्रत्येक संस्थान विशिष्ट विशेषता विकसित करता है।

मानदण्ड–7 का सार मुख्य संकेतको में समाहित हैः

7.1 संस्थागत मूल्य और सामाजिक दायित्व
7.2 उत्कृष्ट पद्धतियाँ
7.3 संस्थागत विशिष्टता

7.1संस्थागत मूल्य और सामजिक दायित्व : इसके अन्तर्गत लैंगिक समानता, संवर्धन कार्यक्रम, पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता जैसे– उर्जा संरक्षण, वर्षा जल संचयन, अपशिष्ट पुनर्चक्रण, कार्बन, न्यूट्रल, हरित पद्धतियाँ, द्विव्यजनों को सुविधाएँ, मानवीय मूल्य, पेशेवर नैतिकता के प्रति स्पष्टता आदि इसके मुख्य संकेतक हैं।

7.2 उत्कृष्ट पद्धतियाँ : संस्थान द्वारा किसी भी समय कोई भी नई पद्धतियाँ अपनाई जा सकती हैं और वह इसके लिए स्वतंत्र होता है यह पद्धतियाँ शिक्षण अधिगम, परिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, कार्यालय पद्धतियाँ, चीजों के अनुरक्षण, मानव संसाधन आदि मामलों से संबंधित हो सकते है यह पद्धतियाँ ही उन्हें अन्य संस्थानों से अलग दिखाती है।

7.3 संस्थागत विशिष्टता : किसी संस्थान की विशेषताएँ ही उसे अन्य संस्थान से अलग दर्शाती है और यह ही उस संस्थान की पहचान होती है।

संकेतकों की भूमिका :

नैक पिछले दो दशकों से उच्च शिक्षा संस्थानों के गुणवत्तापूर्ण मूल्यांकन और प्रत्यायन की प्रक्रिया संचालित कर रहा हैं कई शिक्षा संस्थान इस प्रक्रिया से गुजरकर निकले हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नैक प्रतिबद्ध है और संवदेनशील है नैक ने अपनी मूल्यांकन और प्रक्रिया को उचित रूप से विविधता प्रदान की है इसके अन्तर्गत मानदण्ड आधारित मूल्यांकन प्रक्रिया नैक की ए एण्ड ए प्रक्रिया का आधार है जिसमें शिक्षण संस्थानों के लिए गुणात्मक संकेतक फ्रेमवर्क (क्यू आई एफ) में सात मानदण्ड वाले समान ढाँचे को अपनाया है जिसमें शैक्षणिक और प्रशासनिक पहलू को ही नहीं बल्कि उभरतें मुद्दों को भी शामिल किया गया है प्रत्येक मानदण्ड के अन्तर्गत मुख्य संकेतकों की पहचान की गई है जिनके माध्यम से शिक्षण संस्थानों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की जाती हैं। संकेतक किसी शिक्षण की जानकारी प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।

निष्कर्ष :

निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल) के माध्यम से शिक्षण संस्थानों के बारे में सही जानकारी मिलती है। छात्रों को संस्थान के बारे में शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान बुनियादी ढाँचा और आधारभूत संरचना जैसी

जानकारी प्राप्त करने में आसानी होती है। इसके माध्यम से छात्र अपने लिए बेहतर संस्थान तलाश कर सकते हैं, इतना ही नहीं नैक से शिक्षण संस्थानों की पढ़ाई और डिग्रियों का महत्व भी निर्धारित होता है। विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा संस्थान एक गतिशील वातावरण में कार्य करते हैं। नैक ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन की परिकल्पना की है इस परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए संकेतकों की अहम भूमिका है इतने वर्षो में उच्च शिक्षा संस्थानों एवं अन्य हितधारकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि के साथ–साथ उच्च शिक्षा के राष्ट्रीय परिदृश्य में विकास ने उच्च संशोधन करने में योगदान दिया है।

सन्दर्भ सूचीः

एन.ए.ए.सी.ए दिल्ली (n.d.) संबद्ध / संघटक महाविद्यालयों की स्व अध्ययन रिपोर्ट हेतु नियम पुस्तिका एन. ए.ए.सी. दिल्ली.

एन.ए.ए.सी.ए दिल्ली (n.d.) उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और उत्कृष्टता हेतु एन..ए.ए.सी. हिन्दी संस्करण एन.ए.ए. सी. दिल्ली.Affiliated-Hindi-Manual-09.12.2019pdf

नैक (2019) नैक उच्च शिक्षा के गुणवत्ता और उत्कृष्टता के लिए व शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए स्व अध्ययन रिपोर्ट संबंधी नियम पुस्तक 2019 (शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए नियमावली NAAC Institutional Accreditation Manual Self Study Report Open University 2019